TEACHERS OF BIHAR

The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

जनवरी 2025

अंक 5

मासिक कविता संग्रह

teachersofbihar.padyapankaj.org

पद्यपंकज काव्य संग्रह

यह किताब टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशन सहयोग

संपादक

देव कांत मिश्रा

मध्य विद्यालय धवलपुरा,सुलतानगंज, भागलपुर(टीम लीडर)

संकलनकर्ता

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपुर सिवान

आवरण एवं चित्रण

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन,रघुनाथपुर सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

प्रिय साथियों,

आज हम एक विशेष अवसर का स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए हैं, जब हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं। यह संग्रह न केवल एक पुस्तक है, बल्कि यह बिहार के शिक्षकों की भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता का प्रतीक भी है। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर, हम सभी मिलकर अपने भाषा और साहित्य की समृद्धि को मान्यता देते हैं और इस काव्य संग्रह के माध्यम से अपने विचारों को साझा करते हैं।

बिहार, जो हमेशा से शिक्षा और संस्कृति का गढ़ रहा है, यहाँ के शिक्षकों ने इस संग्रह के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। यह कविताएँ न केवल शिक्षकों के व्यक्तिगत अनुभवों का दर्पण हैं, बल्कि समाज में उनके योगदान और संघर्षों की कहानी भी कहती हैं। प्रत्येक कविता एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है—प्रेम, संघर्ष, समाज, और प्रकृति।
हम हिंदी दिवस के अवसर पर इस काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं, जो हमारी मातृभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हिंदी, जो हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है, इसे संजीवनी प्रदान करना हमारे सभी का कर्तव्य है। इस संग्रह के माध्यम से हम हिंदी भाषा को समृद्ध करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने और समाज में अपनी आवाज उठाने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।
इस काव्य संग्रह के माध्यम से हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन की ओर एक कदम बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का आईना होता है। इस संग्रह में कवियों ने समाज की विडंबनाओं, संघर्षों और उम्मीदों को चित्रित किया है। ये कविताएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ये सोचने और विचार करने के लिए भी प्रेरित करती हैं। हम आशा करते हैं कि यह काव्य संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि सभी पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

हमारा यह प्रयास तब सफल होगा जब आप सभी का सहयोग और समर्थन हमें प्राप्त होगा। इस संग्रह को पढ़ें, विचार करें और अपने अनुभव साझा करें। हमें आपकी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है ताकि हम आगे भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें।

आखिर में, हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह के सभी लेखकों को बधाई देता हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया। हम आशा करते हैं कि यह संग्रह सभी को प्रेरित करेगा और हमारी संस्कृति को समृद्ध करेगा।

धन्यवाद!
—टीचर्स ऑफ बिहार

सम्पादक की कलम से....

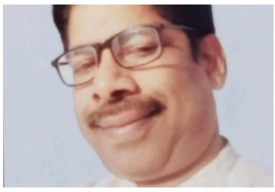

आएँ! नई कविता रचाएँ।
औरों का नित ज्ञान बढ़ाएँ।।
'पद्यपंकज' उत्पल खिलाएँ।
टीओबी बगिया महकाएँ।।

प्यारे साथियों,
'पद्यपंकज' रचनाकारों हेतु टीचर्स आफ बिहार का एक सुंदर बाग है जिसमें भाँति- भाँति कविता रूपी प्रसून समयानुसार खिलते हैं और विचारों की पवित्र धाराओं और विभिन्न तरह की प्रेरणास्पद रचनाओं से सराबोर कर इसके बाग को सुरभित करते रहते हैं। इसी क्रम में एक पावन विचार मन में आया कि क्यों न एक 'मासिक कविता संग्रह' का बाग लगाया जाए तथा समग्र प्रयास से इसे पुष्पित और पल्लवित किया जाए? ऐसा विचार पाकर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

गाँधी जयन्ती के शुभ अवसर पर सत्य, लगन, निष्ठा, परस्पर सद्भाव व सहयोग की राह को अपनाते एवं यथार्थ के धरातल पर अपने विचारों को तर्क की कसौटी पर कसते तथा मद्देनजर रखते हुए सहर्ष कह रहा हूँ कि यह मासिक कविता संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए अपितु सभी पाठकों के लिए उपयुक्त व प्रेरणा का स्रोत बनेगा। हमारा प्रयास तभी सार्थक होगा जब आपका समुचित सहयोग व समर्थन अंतर्मन से होगा। बगैर आपके टीओबी की बगिया कैसे महकेगी? इसके लिए आपका सद्विचार, चिंतन व सहयोग ही हमें कामयाबी दिलाएगी।
अंत में, पद्यपंकज 'मासिक कविता संग्रह' के सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं जो समय-समय पर अपनी रचना से समूह तथा अपनी लेखनी को सुशोभित करते हैं तथा अपना अभिमत देते हैं।हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि यह मासिक कविता संग्रह आपको नई दिशा व प्रेरणा प्रदान करेगी। आप अपनी प्रतिक्रिया व अनुभव को सतत् साझा करते रहें।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
संपादक

नव वर्ष

आओ हम नव वर्ष मना लें
नूतन-नूतन हर्ष मना लें
बीत गया जो वर्ष पुराना
श्रद्धा सुमन उसको अर्पित कर
उष्ण आँसुओं का अर्पण कर
बीत गया जो वर्ष पुराना
उस पर थोड़ा हर्ष मना लें
आओ हम नव वर्ष मना लें।
निशा का अंधकार मिटाकर
अभिलाषा का कर आलिंगन
पनप रहा जो कुलषित भाव
उनकी होलिका दहन करें हम
दूसरों के दु:ख को त्राण करें और
मानवता का कल्याण करें हम
आओ नई प्रतिज्ञा कर के
आज हम नव वर्ष मना लें।
आओ निश्चय आज करें हम
दु:ख- सुख में एक साथ रहें हम
जात धर्म से ऊपर उठकर
जीवन को आदर्श बनाकर
आओ हम नव वर्ष मना लें।

संजय कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकारी
अररिया

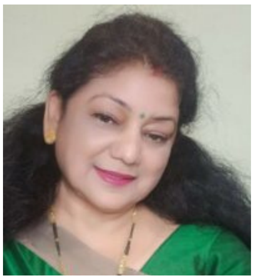

नव वर्ष

नव संकल्प ले नव विहान का,
नूतन अभिनन्दन कर लो।
जो विकृति हो अपसंस्कृति हो,
उसका चलो शमन कर लो।
नव संकल्प ले नव विहान का,
नूतन अभिनन्दन कर लो।
मन मंदिर में राम चेतना का,
अब सहज सृजन कर लो।
मानव से अनुराग राग का,
जीवन में भी वरण कर लो।
नव संकल्प ले नव विहान का ,
नूतन अभिनन्दन कर लो।
माना यह नव वर्ष न अपना,
शुभ की हो शुरुआत सही।
मन में राम जो बस जाएँगे,
शुभ मंगल का बास वही।

नव संकल्प ले नव विहान का,
नूतन अभिनन्दन कर लो।
जो संस्कृति लूट मार की,
दानव के संस्कारों की।
उसके शमन दमन करने को,
शास्त्र शस्त्र ग्रहण कर लो।
नव संकल्प ले नव विहान का,
नूतन अभिनन्दन कर लो।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या

उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज,
कटिहार

नव वर्ष २०२५

नव वर्ष की नई उमंग,
आओ मनाएँ मिलकर संग,
नई आशा व नए विश्वास,
भर लो जीवन नई आस,
नव तरंग और नव उल्लास,
खुशियाँ लाए बिल्कुल खास,
नव संगी नव साथी बन,
करके अपने सुंदर मन,
दबी इच्छाएँ हो जाएँ पूरी,
अभिलाषा है इसकी धुरी,
फिर एक नव संचार कर,
जीत का एक हुंकार भर,
सपनों को नए पंख दे,
ऊँची उड़ान उसे भरने दे,
मन कर्म वचन कर लो साफ,
दुश्मन को भी कर दो माफ,
ईर्ष्या द्वेष है मन का मैल,
चलो निकालें इसका तेल,
भूली को अब बिसार लो,
सभी को गले लगा लो,
नव आभा संग नई शुरुआत,
करें अब वर्ष २०२५ की
बात।।।

विवेक कुमार
भोला सिंह हाई स्कूल,
पुरुषोत्तमपुर
कुढ़नी, मुजफ्फरपुर

नव वर्ष का शुभागमन

नव किरणों संग आई बहार,
हर दिल में जागे नए विचार।
सपनों को दे नए पंख उड़ान,
जीवन में भर दे नव अरमान।
सूरज की पहली किरण का वंदन,
नव उमंग से सजे जीवन का चंदन।
बीते ग़म को भूल, बढ़ें अब आगे,
सपनों के संग आसमान में भागे।
फूलों-सी खुशबू, हवाओं का गीत,
हर पथ पर मिले सफलता का
मीत।
नव वर्ष में हो सबका कल्याण,
हर ओर छाए प्रेम का वरदान।

आओ मिलकर करें ये संकल्प,
सच का साथ और प्रयास सरल।
धरती को स्वर्ग बनाएँगे हम,
हर दिन होगा उत्सव का संगम।
नव वर्ष सबको दे शुभ आशीष,
हर ग़म का तम मिटे आए प्रकाश।
जीवन की राह हो सदैव मंगलमय,
नव वर्ष का हो हर दिन दीप्तमय।

सुरेश कुमार गौरव
उ. म. वि. रसलपुर
फतुहा, पटना (बिहार)

मनहरण घनाक्षरी

बीत गया जो समय,
वह पुराना साल था,
मिलकर हों स्वागत,
आया नववर्ष है।
चारों ओर खुशी छायी,
ढोल-नगाड़े संग हैं,
नाच रहे मिलकर,
आज़ धरा हर्ष है।

गर हो मन- लगन,
श्रम से न मुख मोड़
मूल मंत्र जीवन का,
यही तो उत्कर्ष है।
सुख, शांति औ समृद्धि,
प्राप्त करें पच्चीस में,
ले संकल्प बढ़ें आगे,
यही तो निष्कर्ष है।

भवानंद सिंह

मध्य सह माध्यमिक विद्यालय
मधुलता
रानीगंज अररिया, बिहार

नववर्ष की नई सुबह

आया नववर्ष लेकर नई
सुगंध
स्वर्णिम नूतन विहान।
आँखों में उम्मीदों की
चमक
हर सीने में सुमधुर गान।
धूल धूसरित हो जाए
अवगुण, क्रोध, कलुष,
अभिमान।
निर्मलता हो जन-
जीवन में
अकिंचन का भी रहे
सम्मान।
।

अतीत का रहे बोध, मर्यादा,
मूल्यों का रहे ध्यान।
आदर्शों की सरिता से
अभिसंचित हो सारा जहान।
सबके जीवन चरित्र में महके
स्वावलंबन स्वाभिमान।
रचना सृजन, नव चेतना से
बने
अपना भारत महान।
खिलखिलाती बचपन
खुशियों से झूले नर- नारी
जवान।
सदियों तक सजा रहे भारत
माँ का सतरंगी परिधान।

आशीष अम्बर "शिक्षक"

उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड- केवटी
जिला- दरभंगा, बिहार

नववर्ष की नई किरण

नये वर्ष के नवारंभ में
नये वर्ष के नवारंभ में,
खुशियाँ खूब मना लें।
अपने रिश्ते नातों के संग,
प्रीति भाव बढ़ा लें।
नव वर्ष खुशियों से गुजरे,
कुछ ऐसा ही हम कर पायें।
नवोल्लास की किरणों को
हम अंतस तक ले जायें।
जीवन में हर पल खुशी नहीं मिलती,
यह तो पता सदा है।
प्रकृति के इस अनुपम चक्र की,
यह सबसे बड़ी अदा है।
सुख- दुःख दोनों की है जरूरत,
इस माटी की काया को।
बारी-बारी से आता यह,
भाती प्रकृति की माया को।

चिंतन करें कुछ गुजरे साल की,
तो भूल नजर कुछ आए।
इस वर्ष ऐसी भूल न हो जाए,
जो अगले वर्ष टीस सताए ।
दया करें उन निर्बल जन पर,
जो भूखे पेट सोते हैं।
जीवन को असहाय पाकर ,
दिल से खूब भी रोते हैं।
वर्ष २०२५ क्यों आया,
इसका मतलब भी हम जानें।
नित परोपकार की बुद्धि रख,
बात मानवता की पहचानें।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

नववर्ष

बधाई नया साल पर, देते सभी
सुजान।
इससे विस्मृत हो रही, सदियों की
बलिदान।।
दूर जिसे भगाएं थें, देकर हम
बलिदान।
आज साल उसका नया, मना रहे दे
मान।।
जो हमारी संस्कृति को, किया सदा
नुकसान।
आज उसी के जश्न को, देते इतना
मान।।
शीतलहर भी आज है, कहा हमें
नादान।
खुशी तुम्हें किस बात का, पाकर हर
व्यवधान।।
सहृदयता हमारा यही, मान लिया
पहचान।
अपनी सभ्यता को कभी, करें नहीं
नुकसान।।

छीन लिया अधिकार जो, वो बन गया
महान।
अधिकारिक भी बन गया, नववर्ष का
विधान।।
सभ्यता हमारी यही, भारत की पहचान।
सहेजें हर संस्कृति जो, दे आदर
सम्मान।।
नववर्ष धूम-धाम से, मनता ले अरमान।
पाठक दुविधा में पड़ा, बैठा है नादान।।
शिक्षा को नववर्ष में, करिए दिशा प्रदान।
जिससे उन्नति जन करें, देश करें
उत्थान।।
प्रण करिए नववर्ष में, शिक्षा को दें
उड़ान।
वर्णित हो इतिहास में, हम शिक्षक का
मान।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

अग्निपथ के राही

न बची किसी की जान यहाँ,
और नहीं सर्वदा शान रही।
जो भी आया इस दुनिया में,
केवल कर्म ही उसकी पहचान रही।।
न रहे अवधपति श्रीराम यहाँ,
और न रुक सके द्वारकाधीश प्रवीर।
न रहे वीतरागी गौतम बुद्ध यहाँ,
और न रुक सके तीर्थंकर महावीर।।
सारे जग में कर्म की बदौलत ही,
इस जग में नाम किसी का होता है।
जो जैसा करता इस दुनिया में,
वह भाग्य भी वैसा बोता है।।
न रहा कोई इस दुनिया में,
न कभी आगे भी रह सकता है।
जीवन में केवल एक राम नाम,
जिसे छोड़ नहीं कोई रह सकता है।।
सब आकर यही सपना देखे,
जाऊँ न कभी दुनिया को छोड़।
लेकिन जब अंत समय आता तो,
रख देता काल दिल को मरोड़।।
हुई है हार हमेशा मानव की,
प्रकृति ने सब दिन बाजी मारी है।
उस पर वश है केवल प्रकृति की,
आखिर संसार उसी की सारी है।।
अच्छा कर्म जग में करने से,
केवल सद्भाव भरा जन जीता है।
कर्म कर फल पर अधिकार न तेरा,
यही हरदम कहती गीता है।।
जरा प्रेम कर सभी जन से।
सब छोड़ यहाँ से गुजरना है।
केवल धर्म अधर्म के सहारे ही,
अग्निपथ का भी राही बनना है।।

अमरनाथ त्रिवेदी

उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

अनमोल जीवन

क्या हुआ जो सिंह गर्जन कर रहे अंजान पथ में,
क्या हुआ जो शूल अग्नि की दहक है नव सृजन में।
है यही अनमोल जीवन और सृजन हार तुम हो,
ना है रुकना ना है थकना विजय पथ के तुम पथिक हो।
क्या हुआ जो न्याय पथ पर पड़ गए हो तुम अकेले,
क्या हुआ जो अरि की सेना ने लिया चहुँ दिशि घेरे।
क्या हुआ जो तुम विरथ हो और रथी सम्मुख हैं तेरे,
उठ सम्भलकर चल प्रखर वन विजय पथ संकल्प ले के।
क्या हुआ जो अश्रु सिंचित लोल और कपोल तेरे,
क्या हुआ जो नित अंगारे हैं बरसते इस गगन से।

क्या हुआ जो कोटिशः कुपित अँधेरे राह घेरे,
एक रश्मि है निकलती नव विहान का राग ले के।
चिरता है तम का सीना नित्य रवि अवतार ले के,
खग विहग कलरव चहकते हैं सुबह नव गान ले के।
कर लो वंदन विजय चन्दन तुम पथिक स्व मान लेके,
जीवन है अनमोल तेरा चल पथिक संधान ले के।
है यही अनमोल जीवन और सृजनहार तुम हो,
ना है रुकना ना है थकना विजय पथ के तुम पथिक हो।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या

उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज,
कटिहार

सत्य-पथ के जीवन रचयिता

शिक्षक कहलाते ज्ञान रचयिता
अनुशासन के होते नियम संहिता।
कहलाते हर प्रश्नों के हलकर्ता,
सत्य-असत्य के निर्णयकर्ता।
जीवन में जो ज्ञानदीप जलाते,
हर अंधियारे को शीघ्र मिटाते।
सुसंस्कारों की छवि बढ़ाते,
मन उजियारा भाव बताते।
पथ भ्रमित को राह दिखाते,
दृढ़ संकल्पों को सदा सजाते।
कठिनाई से लड़ना सिखलाते,
सपनों में नव विश्वास जगाते।

ज्ञान की गंगा सदा बहाते,
दीप शिक्षा का नित्य जलाते।
शिष्य-जीवन सुरभित करवाते,
कर्तव्य की वे मूरत कहलाते।
नमन उन्हें, जो प्रेरक बनते,
सत्य-पथ पर जीवन रचते।
शिक्षक हैं ईश्वर के प्रतिरूप,
हटा देते अंधकार का रूप।

सुरेश कुमार गौरव,’
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

सर्द हवा

कुहासा बाहर गहरा है
सर्द हवा का पहरा है।
कुछ नहीं पड़ती है दिखाई
बच्चों तुम न करो ढिठाई
कुछ दिन छिपकर रह लो घर में
जो पढ़ें उसे दुहरा लो घर में
यह ठंड अभी हीं पसरा है
कुछ दिनों तक ठहरा है ।
कुहासा बाहर गहरा है
सर्द हवा का पहरा है।
ताप बहुत ही हो गया कम
रखा सबको करके बेदम
सूरज आँख मिचौली करते
पता नहीं कहाँ वो रहते
सूरज का आना बिसरा है
पानी-सा बाहर बिखरा है।
कुहासा बाहर गहरा है
सर्द हवा का पहरा है।
कपड़े ऊनी गर्म पहन लो
खुद के हित में यह वचन लो
ठंडा कुछ दिन खाना नहीं
व्यर्थ का बाहर जाना नहीं
करना नहीं कुछ नखरा है
तुमसे ही सबको असरा है।
कुहासा बाहर गहरा है
सर्द हवा का पहरा है।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

बहती शीतल मंद बयार

देखो मौसम यह कैसा आया है,
सर्द हवा संग लाया है।
प्रकृति के अनमोल पलों में,
जीवन का राग सुनाया है।
बहती शीतल मंद बयार,
होते सभी को धूप से प्यार।
दिन में धूप कम मिलती है,
शाम में ठंड अधिक बढ़ती है।
रातें बड़ी औ दिन छोटे होते,
अपनी पढ़ाई हम कभी न खोते।
प्रकृति का अनुपम वरदान,
रवि फसलों में लाती है जान।
सबको भाते गर्म नरम कपड़े,
नहीं कोई पड़ते इसमें लफड़े।

सबको चाहिए स्वेटर, कोट, रजाई,
भोजन गर्म संग दूध मलाई।
शरीर पोषण का यह समय सुहाना,
मौसम यह पोषण का खजाना।
मन करता कभी निकलूँ न घर से,
ठंड के कारण कहीं जाऊँ न डर से।
पर आलस छोड़ बनना सुजान,
हमें काम पर नित रखना ध्यान।
हम सबके अपने सपने प्यारे,
अब नहीं कहीं दुविधा के मारे।
हम सब पढ़ने को जाएँ स्कूल,
नहीं पढ़ने की कभी करें न भूल।
।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

कुछ नवीन सृजन करो

त्यागकर व्यग्रता को अब
तुम,
मनन करना शुरु करो।
कठिन परीक्षा अभी बहुत है,
मन को तुम धीर करो।
खोल कर ईक्षण को अपने,
स्वयं के दर्शन करो।
दिए थे जो स्व को वचन तुम,
वचन का स्मरण करो।।
छोड़कर आलस्य को अब
तुम,
चित्त से निश्चय करो।
साधोगे लक्ष्य को असंशय,
अविरत स्वधर्म करो।
ज्ञान और विज्ञान से अब
तुम,
नव्य अन्वेषण करो।

होगा गर्व तुम पर सभी
को,
कुछ नवीन सृजन करो।।
कहते जो मनीषी हमारे,
उनका अनुसरण करो।
पाओगे निश्चिंत सफलता,
अहम का मर्दन करो।
रखना आस्था परमसत्ता
पर,
नित उन्हें सुमिरन करो।
ईश से पाकर आशीष तुम,
दिव्यता धारण करो।।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
मध्य विद्यालय बाँक, जमालपुर, बिहार

दोहावली

किसके मन में क्या यहाँ, जान सका कब कोय।
कोई दुख से रो रहा, कोई सुख में रोय।।
उलझन का हल ढूँढिए, बड़े धैर्य के साथ।
औरों से मत पूछिए, उल्टा देगा नाथ।।
पवन पुत्र हम पर यही, करिए कृपा प्रदान।
शिक्षण कौशल दें हमें, कर्म बिना व्यवधान।।
शीत लहर है चल रही, रखिए तन का ख्याल।
उष्ण जल हीं पिया करें, करिए खूब गलाल।।
जो सुख की चाहत रखे, धरिए मन संतोष।
जीवन यों न बिताइए, देते प्रभु को दोष।।
सबसे मिलकर ही रहें, जैसे मोती हार।
हर दूजे में जोड़िए, प्रेम भाव के तार।।

मधुर वचन मोहे सदा, मन में भरे मिठास।
बैर किसी से हो नहीं, बने पराया खास।।
यश बल विद्या आयु का, होता है गुणगान।
नित अभिवादन श्रेष्ठ से, मिले जगत सम्मान।।
भव्य सुनहरे पल सभी, अपने बने हजार।
आए विपदा पास जब, लगते सभी किनार।।
मृदा सम है छात्र सभी, दें सुंदर आकार।
जो जैसा सपना रखे, वैसा हो साकार।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

वीरता की गाथा व संदेश

शस्त्रों की शान, देश धर्म की पहचान,
हर युग में जिनसे गौरव पाता इंसान।
वीर सपूत गुरु गोविंद, महान
अधिनायक,
सच्चाई का दीप जलाने वाले
गुरुनायक।
पिता ने शीश दिया, धर्म की खातिर,
हर जन के लिए कर्तव्य की रीत
बतलाई
कंटकों के साए में त्याग की ज्योति
जलाई,
गुरु गोविंद सिंह ने वीरता की
परिभाषा सिखलाई।
चार पुत्रों का बलिदान दिया,
न्याय और धर्म के लिए ही जिया
संत भी, सिपाही भी, दोनों स्वरूप,
हर हृदय में आज भी बसते अनुपम
रूप।
“सवा लाख से एक लड़ाऊँ,”
दुश्मनों के दिलों में तूफान जगाऊँ।

ऐसे थे गोविंद सिंह, धर्म के
रखवाले,
मिटा दिया अन्याय, जो
मानवता को खाए।
गुरुवाणी में प्रेम का संदेश दिया,
शस्त्रों से अधर्म का नाश किया।
आन-बान-शान के प्रतीक बने,
वीरता से अमर, इतिहास रचे।
हे गुरु गोविंद! आपको शत-शत
प्रणाम,
आपसे ही सीखा है बलिदान के
आयाम।
धर्म की धरती पर आपकी गाथा
अमर है,
आपका संदेश हर युग में अजर
है।

सुरेश कुमार गौरव

उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना

दुश्मनी कभी न पालिए

अगर दोस्त किसी के बन न सके,
तो दुश्मनी भी किसी से न पालिए।
ईर्ष्या, द्वेष, घृणा की आग में,
कभी जीवन को न गुजारिए।
जलाती पहले ईर्ष्या खुद को,
यह जिंदा हमें ही मारती।
दूसरों के साथ विद्वेष से,
पहले अपना ही भाग्य बिगाड़ती।।
दोस्त किसी के अच्छे बनें,
यह मानवता की शान है।
पर वही निभाए नहीं दोस्ती,
यह उसके सोच की पहचान है।।
जरा जरा-सी बात पर,
दुश्मनी कभी न पालिए।
कुछ निज दोष को भी,
समय रहते ही निहारिए।।
अति स्वार्थ की पहचान है,
दुश्मनी का खुला रास्ता।
फिर क्यों करें उससे दोस्ती,
जिसे केवल स्वार्थ से हो वास्ता।।

कुछ अंध स्वार्थी लोग होते,
लगे रहते निज स्वार्थ में।
सब कुछ   वे भुला देते ,
न रखते भाईचारा परमार्थ
में।।
हश्र होता उसका यहाँ पर,
न रहता है वह किसी काम
का।
केवल बदनियती ही उसमें
झलकती,
उसके स्वार्थ भरे अंजाम का।।
कभी आप भी इधर-उधर,
न ईर्ष्या की आग भड़काइए।
कभी द्वेष में विमल बुद्धि को,
न तनिक भी म्लान बनाइए।।

अमरनाथ त्रिवेदी

उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

मनहरण घनाक्षरी

टहनियों पत्तियों से
ओस है टपक रही,
कुहासे से पटा हुआ,
खेत-वन-बाग हैं।
तन को गलाता तेज
पछुआ पवन बहे,
ठंड से ठिठुरा हुआ,
पिल्ला और काग है।
तन पे वसन फटा,
भूख से बदन टूटा,
झोपड़ी में बुझी हुई,
अंगीठी की आग है।
गरीबों का पेट भूखा,
हवाओं का आता झोंका,
हाड़ को कँपाती जैसे,
डँस रहा नाग है।

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'
म. वि. बख्तियारपुर, पटना

हिन्दी हमारी शान है

हिन्दी हमारी शान है, हिन्दी है पहचान,
संस्कृति का अभिमान, हिन्दी का गान।
मिट्टी की खुशबू में रचती यह दमक,
हिन्दी है भारत की अद्भुत चमक।
शब्दों का यह मेला, भावों का सागर,
हर दिल में बसती, यह अनमोल गागर।
ज्ञान की दीपशिखा, मन का उजाला,
विश्व में फैलाए अपनी मधुर माला।
हिन्दी का जादू, जोड़े हर भाषा,
दिलों को बाँधे, बनाए समता की आशा।

अंतर्राष्ट्रीय मंच पर बढ़ाए मान,
हिन्दी के संग चमके भारत महान।
आओ मिलकर लें यह संकल्प,
हिन्दी की सेवा में न हो कोई विकल्प।
सृजन का दीप जलाएँ हर दिशा,
विश्व में गूँजे हिन्दी की खूब प्रशंसा।
विश्व हिन्दी दिवस पर हम गर्व करें,
इसको समृद्ध कर भारत का मान भरें।

सुरेश कुमार गौरव
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना

राष्ट्रधर्म निभाती हिन्दी

हिंदी!
संस्कृत की जाई,
देवनागरी लिखाई,
स्वर व्यंजन वर्ण,
सब से बन है पाई।
हिंदी !
सुपाठ्य और सुलेख्य,
कुछ भी नहीं अतिरेक।
जैसी दिखती, वैसी होती,
बोलना लिखना सब एक।
हिंदी !
विविध बोली ,
भाषा को लेती समेट।
गतिमान, निर्मल नेक,
समृद्ध व्यापक निर्मल भेंट।
हिंदी !
गौरवमयी गाथा,
भारतेंदु ,निराला,
जयशंकर , प्रेमचन्द, महादेवी,
अनगिनत साधक ज्ञाता।

हिंदी!
नहीं अघाती,
फुले नहीं समाती,
गद्य पद्य कविता कहानी,
लेख नाट्य की सरिता बहाती।
हिंदी !
गीत संगीत में रमती रमाती।
भजन गजल सुनाती,
रूप बदलकर खिलखिलाती।
रोम-रोम को पुलकित कर,
गुदगुदाती पूर्णता प्रदान करती।
हिंदी !
हिन्द देश की प्यारी,
जन मन को भाती।
राष्ट्रभाषा कहलाती,
राष्ट्र धर्म निभाती।

स्नेहलता द्विवेदी"आर्या"
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज,
कटिहार

हम हिन्दी के दिवाने हैं

यह अंग्रेजी का जमाना है,
हम हिन्दी के दिवाने हैं।
होता समाज का नवीनीकरण,
और हमारे ख्याल पुराने हैं।।
हिन्दी की व्यथा से आज,
हर कोई बनें अनजाने हैं।
अनपढ़ भी अंग्रेजी में हीं,
देखो सुनते गाते गाने हैं।।
यह अंग्रेजी का जमाना है,
हम हिन्दी के दिवाने हैं।
जब हम बोलते हिन्दी तो,
खुद लगते शर्माने हैं।
चाहें जो भी हों कठिनाई,
हमने भी प्रण ठानें है।।
हिन्दी में हूँ पला-बढ़ा मैं,
हरदम साथ निभाने हैं।
यह अंग्रेजी का जमाना है,
हम हिन्दी के दिवाने हैं।

अनुनय, विनय, क्षमा-प्रार्थना
महाशय के साथ निभाने हैं।
सुप्रभात शुभ संध्या कहते,
तो लगता जैसे ताने हैं।
अंग्रेजी से कोई जलन नहीं,
पर हिन्दी हीं अपनाने हैं।।
यह अंग्रेजी का जमाना है,
हम हिन्दी के दिवाने हैं।
छोड़कर हिन्दी, हो बेघर,
शौक नहीं समय बिताने हैं।
टाई, कोट, पैंट, हैट सब
हमको नहीं दिखाने हैं।
है सर्वोत्तम संस्कृति हमारी
“पाठक” सह सबको अपनाने
हैं।
यह अंग्रेजी का जमाना है,
हम हिन्दी के दिवाने हैं।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

युवाशक्ति के प्रतीक स्वामी विवेकानंद

हे स्वामी! जग में ज्ञानदीप आपने जलाया,
हर हृदय में नवचेतना को खूब सजाया।
कर्म का संदेश देकर विश्व को समझाया,
योग का मर्म आपने जग में पहुँचाया।।
शिकागो में भारत का मान बढ़ाया,
“धर्म सभा” में सत्य का दीप जलाया।
“भाइयों-बहनों” का संबोधन बाला,
हर मानव को अपनत्व से भर डाला।।
तत्वज्ञान, कर्मयोग की धार आपने बहाई,
अज्ञान तिमिर में दिव्य ज्योति जलाई।
युवाओं को दी प्रेरणा, एक नई राह की,
हर क्षण में देखा छवि अलौकिक प्रभु की।।

राष्ट्रीय युवा दिवस, युवा शक्ति का प्रतीक,
आपके आदर्शों से बनता पथ प्रवीण।
संघर्षों से सिखाया साहस, धैर्य का पाठ,
हर सपने को दिया नई उड़ान का साथ।।
हे विवेकानंद! प्रणाम आपको सदा,
आपके विचारों से जीता विश्व बड़ा।
आपके आदर्शों पर चलते रहें हम,
भारत बने फिर से विश्व गुरु परम।।

सुरेश कुमार गौरव,
उ. म. वि. रसलपुर फतुहा, पटना

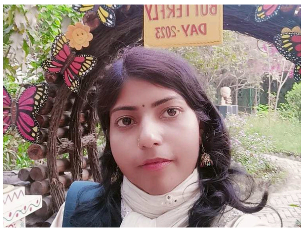

युवाशक्ति

उठो युवा, चलो युवा
तुझे है पथ पुकारता
स्वर्णिम इतिहास रचो
वक्त है निहारता।।
लो अंजुरी में नीर तुम,
करो प्रगाढ़ संकल्प
करोगे कर्म हर दिवस,
न दूसरा कोई विकल्प।।
वो वीर कैसा धीर जो न
स्वप्न को सकारता।
उठो युवा............।
युवा चले तो बढ़ चले,
उम्मीद के ये काफ़िले
नई रीति, नई नीति के
नित नवल दीए जले।।
झुकेगा आसमां,
जमीं बना के देगी रास्ता।
उठो युवा............।
युवा के प्राणपण से ही,
विकसित समाज हो
दिखे जो जुर्म होता कहीं,
बुलंद ये आवाज हो।।
हो बात देश के विरुद्ध,
उसे स्वरा नकारता।
उठो युवा.............।

डॉ स्वराक्षी स्वरा
मध्य विद्यालय हनुमान नगर बेलदौर
खगड़िया, बिहार

एक योगी

एक योगी !
मानव को है जगाता,
चेतना को है उठाता,
विश्व के रण में उतरता,
एक योगी !
एक योगी !
उस शिकागो को बुलाता,
भ्रातृत्व का संदेश देता,
विश्व को नई रोशनी से,
जगमगाता।
एक योगी !
एक योगी !
इस सनातन को
सहज ही गुनगुनाता,
वेदान्त के मर्म को,
दूर देशों को दिखाता,
एक योगी !

एक योगी,
नर और नारायण को,
संग बुलाता,
धर्म की पगडंडियों को,
धर्म का है पथ बताता !
एक योगी !
एक योगी !
राष्ट्र की इस चेतना को,
है जगाता !
विश्वगुरु इस देश को,
फिर से बताता !
एक योगी !
एक योगी !
देश के नव यौवनों को,
है पुकारे,
आ ! यह देश है नवसृजन को,
तुमको पुकारे।
एक योगी !

स्नेहलता द्विवेदी"आर्या"
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज,
कटिहार

युवाशक्ति का हो आगाज़

प्रखर युवा का जोशीला आगाज़ हो।
बदलते तकनीक में भी नया अंदाज हो।।
करुणा भरी नदी में विशाल जहाज़ हो।
पौरुष ऐसा निर्भीक मानो सक्षम यमराज हो।।
जिसमें हर बाधा को हरने का परवाज़ हो।
नर-नारी सबका करे एक समान लिहाज हो।।

हर एक बुराई से जिसे ऐतराज हो।
देशहित की नाकामी पर जो नाराज हो।।
अमन- शांति का अपना स्वराज हो।
क्या धनी, क्या निर्धन हर युवा खुद में युवराज हो।।
हर बहन को अपने भाई पर नाज हो।
भाईचारा का संदेश फैलाएँ ऐसा युवा समाज हो।।

आशीष अम्बर(शिक्षक)

उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड- – केवटी
दरभंगा, बिहार

विश्व चेतना के अग्रदूत स्वामी विवेकानंद

विश्व चेतना के दिग्गजों में,
जिनका नाम शुमार है।
वे भारत के सर्वोच्च अवधूत,
उनकी कीर्ति अपरम्पार है।।
बचपन में जिनका नाम नरेंद्र,
वे प्रतिभा के आगार   थे।
जिनकी वाणी में ओज की गंगा ,
तीक्ष्ण बुद्धि के परमाग़ार थे।।
भारत के ऐसे यशस्वी संन्यासी,
जो निज कर्मों के लिए नूर थे।
अखंड विश्व के धरातल पर ,
सचमुच वे बहुत मशहूर थे।
परमहंस को जिन्होंने गुरु बनाया,
स्वजीवन परमार्थ   लगाया।
विश्व मंच पर अलख जगाकर,
हिंदू धर्मों का मान बढ़ाया।

कोटि कोटि नमन करूँ उनको,
जो देव कोटि अवतार थे।
लोक कल्याणार्थ समर्पित जीवन,
शुभ संस्कृति के भी आगार थे।।
सुदूर   शिकागो   में   जाकर,
विश्व मंच पर लोहा मनवाया था।
विश्व हित में बने अवधूत ने,
सचमुच अपना पांडित्य झलकाया था।।
जब हुआ जयघोष शिकागो में,
तब भारत का मान बढ़ाया था।
इस विश्व हिंदू धर्म सम्मेलन में ,
मिट्टी का भी मान चमकाया था।।
जो अल्प वय में किया अवधूत ने,
उनके समक्ष हजारों शतायु भी बेकार
हैं।
जैसे एक चन्द्र की ज्योति प्रभा से,
हजारों   नक्षत्रमणि   बेअसरदार हैं।।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

स्वामी विवेकानंद

विवेकानंद आज हैं, किए जा रहे याद।
हम मनाएँ जन्म दिवस, करते यह फरियाद।।
युवा राष्ट्र के बोलिए, रहें न किंचित मौन।
बन जाए फिर विश्व गुरु, भार उठाए कौन।।
कलकत्ता के प्रख्यात, विश्वनाथ के पुत्र।
राज योग रचना किया, दिया जगत को सूत्र।।
बचपन से हीं प्रखर थें, भायी जिनको न्याय।
जीवन आदर्शवादी, संन्यास में बिताय।।
विश्व धर्म संसद जाकर, दर्शन किया बखान।
करुणा को सनातन की, बतलाया पहचान।।
निर्मल मन नरेन्द्र रहे, परमहंस के शिष्य।
विवेकानंद बन गए, जो बदलें परिदृश्य।।

उठो जागो और चलो, करने लक्ष्य संधान।
विवेकानंद ने कहा, मिलेगा नव विहान।।
युवाओं आगे आओ, दो खुद को पहचान।
बन जाए फिर विश्व गुरु, भारत देश महान।।
रचना कर वेदांत की, दिया विश्व को ज्ञान।
कर्मयोगी बनें सभी, करें जगत उत्थान।।
रामकृष्ण मिशन में हीं, जीवन दिया गुजार।
युवा शक्ति के प्रणेता, समावेशी विचार।।
स्वतंत्रता के लिए भी, किया जागृति प्रसार।
वो नरेंद्र मानव नहीं, लगे देव अवतार।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

जागो उठो और आगे बढ़ो

सृष्टि पर,
यशस्वी कर्मठ,
संत हुए एक महान,
थी उनकी अलग पहचान।
सरल सौम्यता,
थी जिनकी शान,
वो कोई और नहीं,
विवेकानंद थे महान।
अद्भुत तेज,
धैर्य गुण सहेज,
प्रतिभा के धनी,
सिर पर जैसे हो मणि,
उच्च विचार से,
भरी शिकागो में हुंकार,
भाइयों बहनों के संबोधन ने,
जग में दिलाई पहचान।
युवा को,
दिखाया सटीक राह,
दिया जीने की चाह,
बन गए उनके पितामह।
नन्द उवाच..,
युवाओं उठो आगे बढ़ो,
डिगना नहीं, झुकना नहीं,
लक्ष्य से पहले रुकना नहीं।

ब्रह्माण्ड की,
सारी शक्तियों का,
आज तू कर संचार,
अपनी अंतरात्मा को निखार।
सच कहने के,
तरीके हैं हजार,
कितना भी करे दो चार,
सत्य तो सत्य है न पाएँगे पार।
निंदा,
किसी की न करो,
बढ़ाने की चाह हो तो,
मदद की हाथ आगे करो।
एक समय में,
करें एक ही काम,
डाल दो उसमें आत्मा तमाम,
बन जाओगे इंसान महान।
गुरु वाणी ने,
सिखाया भविष्य कर्ताओं को,
कैसे करें, अपनी राह आसान ,
जग में बढ़ाएँ अपना मान।
ऐसे जगत मसीहा को,
आज करे वंदन अभिनन्दन,
जिसने किया राष्ट्र को नमन,
देश को बनाया खिलता
चमन।।

विवेक कुमार
भोला सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय
पुरुषोत्तमपुर
कुढ़नी, मुजफ्फरपुर

मकर संक्रांति

सूरज की किरणें संग उमंग लाई,
मकर संक्रांति ने खुशियाँ बरसाई।
खिचड़ी की महक, तिल-गुड़ का मिठास,
हर मन को भाए यह त्यौहार खास।।
गगन में उड़ते विविध पतंगों के रंग,
खुशियों के संग बँधे जीवन के ढंग।
नव प्रकाश लेकर आई है संक्रांति,
धरा पर लिख रही नव गीतों की क्रांति।।

तिलक लगाकर करें पूजन सूर्य देव,
धन-धान्य से भरें सबका जीवन।
प्रेम, सौहार्द का मीठे संदेश सुनाएँ,
मकर संक्रांति को हर्ष से मनाएँ।।
संग-संग बहें उमंग के झरने,
मंगलकामना हो सबके घर में।
धरा, गगन और मन का संयोग,
मकर संक्रांति से मिटे सबका रोग।।

सुरेश कुमार गौरव,
उ. म. वि. रसलपुर फतुहा, पटना

पर्व संक्रांति पावन अनमोल

पावन मकर संक्रांति का पर्व अनमोल,
मास जनवरी में यह अमृत घोल।
सर्दी से बचने का यह पर्व अनुपम है,
इसमें चूड़ा, दही औ लाई का दम है।
पर्व मकर संक्रांति बड़ा निराला
यह दिन होता बहुत भोला-भाला।
धनु राशि से सूर्य जब मकर राशि में आते,
मकर संक्रांति का हम पावन पर्व मनाते।
जाड़े की उल्टी गिनती शुरू हो जाती,
दिन में सूर्य की किरणें प्रखर हो जाती।
इसमें दान पुण्य का महत्त्व अधिक है,
यह जीवन में ऊष्मा आने का प्रतीक है।
सबको खिलाएँ चूड़ा दही संग लाई मिठाई,
इस वार्षिक पावन पर्व की करें बड़ाई।

इस पर्व में खिचड़ी संग घी अचार खाते हैं
इस पर्व में खुशियाँ भी कई प्रकार पाते हैं
तिल के लाई बने हों गोल,
ऊपर से जब हों मीठे बोल।
प्रेम बढ़ाकर दिल में घोल,
यह मौसम है बड़ा अनमोल।
जन-जन में जागे तरुणाई,
जब खाए लोग लाई मिठाई।
जीवन खुशियों से भर जाए,
जब यह पावन पर्व वर्ष में आए।
इस पावन पर्व की करें समीक्षा,
फिर वर्ष भर के लिए करें प्रतीक्षा।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

मकर संक्रांति

बच्चों ! जानो आज मकर संक्रांति है,
सूर्यदेव की मकर राशि में विश्रांति है,
मकर राशि में जाते ही उनका तेज बढ़ता है,
आज से ही मार्त्तण्ड सतत प्रखर होता जाता है,
आज कुलदेवता, सूर्यदेव को तुम प्रणाम करो,
मातु, पिता, गुरुजनों का नित तुम सम्मान करो,
दिवाकर सदृश तुम भी स्वयं को सदा प्रखर
करो,
हर कार्यों में उपयोगी हो, निज पुरुषार्थ प्रकट
करो,
आज से छः माह सूर्य को उत्तरायण जानो,
तत्पश्चात् भास्कर को तुम दक्षिणायण जानो,
बच्चों ! आज तुम पतंग उड़ाना,
ऊँचे अम्बर में तुम उसे लहराना,
पतंग के उड़ान से बहुत कुछ सीखना,
पतंग तेरे कर से न कटे, थोड़ा देखना,
मन-मस्तिष्क के पतंग को भी उड़ाना,
उसे अंतरिक्ष की भी अवश्य सैर कराना,
किन्तु पतंग सदृश भूमि से जुड़े रहना,

कितना भी जीवन-पथ पर तुम आगे बढ़ो,
निज कुल आचार मत बदलना, न छोड़ना,
अपनी कुल परम्परा जड़ है, याद रखना,
जड़ बिना ऊँचाई का मोल नहीं, ध्यान रखना,
कितना ऊपर उठ जाओ, मातृभूमि हित
अवश्य कुछ करना,
सदा सभी कर्त्तव्यों-दायित्वों का पालन करते
आगे बढ़ना,
कितना भी उड़ान भरो, पर यथार्थ-वर्तमान से
डटकर जुड़े रहना,
बच्चों! स्वयं को सब कार्यों के लिए ऐसे
उपयोगी बनाना,
कि जहाँ जाओ अमिट चिह्न छोड़ आओ,
ध्यान रखना,
जीवन-पर्यन्त सदा सीखते रहना, लक्ष्य-
प्राप्ति हेतु प्रयास करना,
अपने क्षेत्र, अपनी विधा में तुम नित निरन्तर
अभ्यास करना,
बच्चों ! तुम उस्ताद कम, सदा अच्छा शागिर्द
बनना,
ठोस उपलब्धियों हेतु तुम कुछ भी कर
गुजरना।

गिरीन्द्र मोहन झा
+२ भागीरथ उच्च विद्यालय, चैनपुर-पड़री,
सहरसा (बिहार)

दोहावली

मने हमारे देश में, नित्य नये त्योहार।
मकर रवि का प्रवेश जब,खुशियाँ तभी अपार।।
बाँट रहे खुशियाँ सभी, मिलजुल कर परिवार।
संक्रांति की बेला यह, उत्तर सूर्य पधार।।
फसल भरा खलिहान में, किसान करे विचार।
खुशी मनाएँ हम सभी, लोहड़ का त्योहार।।
आसमान में उड़ रहे, पतंगों की कतार।
काट रहा है डोर जब, करें डोर में धार।।
शनि से मिलते सूर्य हैं, आकर उनके द्वार।
गंगा माँ सागर मिली, सबको कर उद्धार।।
खिचड़ी पोंगल लोहड़ी, नाम अनेक विचार।
पौषी माघी शिशिर यह, देश-विदेश प्रसार।।

स्नान दान प्रयाग में, जीवन देती तार।
महिमा गंगासिंधु की, करता शास्त्र प्रचार।।
दधि चूड़ा तिलकुट चले,आज पूरे बिहार।
खिचड़ी लगती तब भली,जब दधि संग अचार।।
खुशी मनाने जा रहें, पाकर शिशिर किनार।
बुलाना है बसंत को, चलो करें मनुहार।।
सबको है शुभकामना, भरा रहे घर-बार।
मकर संक्रांति है शुभद, बनकर रहें उदार।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज, पटना

वीरों से चमके गगन सदा

तलवार-सी तेज़ है, हर जवान का हौसला,
चट्टानों से टकराए, रुके ना कभी काफिला।
तिरंगे की शपथ ले, बढ़ते वो सीना ताने,
दुश्मन के दिलों में डर, हर कदम बंदूक ताने।
हिमालय की ऊँचाई से उनका हौसला बढ़ता,
सागर की लहरों संग हर योद्धा आगे बढ़ता।
धरती के प्रहरी हैं, आकाश के वो शेर,
दुश्मन की चालों को पल में कर दें ढेर।
गरजें जब रण में, बिजली भी काँप जाए,
शत्रु का हर किला पल भर में ढह जाए।
मातृभूमि के लिए जान भी न्योछावर कर दे,
हर सैनिक के दिल में जज्बा वतन पे जान कुर्बान कर दे।

जिनके दम से है ये तिरंगा आसमान में,
गूँजती है जय हिंद की गाथा हर गान में।
आँधी हो या तूफान, वो रुकते नहीं कभी,
वतन के इन वीरों से चमके गगन सदा ही।
आओ झुकाएँ शीश, करें इनका सम्मान,
भारतीय सेना है, देश की सच्ची जान।
हर सैनिक की गाथा है उनकी गौरवमयी कहानी,
जय हिंद! जय भारत! यही है हमारी वाणी।

सुरेश कुमार गौरव,
उ. म. वि. रसलपुर फतुहा, पटना

थल सेना दिवस

सीना तानकर जो खड़े, देश हित दिन
रात में।
सो रहे हैं चैन से हम, परिजनों के साथ
में।
तिरंगा सदा लहर रहा, छूता जो
आसमान है।
इनसे जन-गण भारत का,यही हमारा
सुगान है।
आठों प्रहर हैं जो सजग, धूप अथवा
छाँव में।
निर्भय हो हम घूम रहें, शहर हो या
गाँव में।
चट्टानों-सा अडिग सदा, सीमा पर
जवान हैं।
दुश्मन से टकरा जाते, बनकर एक
तूफान हैं।
रुकना कभी सीखा नहीं, आँधी व
तूफान में।
अपना हर साँस लगाया, जो देश के
सम्मान में।
मातृभूमि की रक्षा खातिर, दे दिया भी
जान हैं।
हरपल हीं इन वीरों से,अटल हिंदुस्तान
हैं।

वीरों के इस धरती की, यही
सच्चे शेर हैं।
चुटकियों में करते सदा,
दुश्मनों को ढेर हैं।
हो सागर-सी खाईं तो, खुद
बने तूफान हैं।
सीमा को अक्षुण्ण रखें, त्याग
अपनी जान हैं।
हमें हमारी सेना पर, स्वयं से
अधिक गर्व है।
थल सेना दिवस मनाएँ, जैसे
एक पर्व है।
शीश झुकाएँ वंदन में, ये देश
की शान हैं।
इनके दम पर हीं पाठक, वतन
हिंदुस्तान हैं।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

अपने बोल में मिसरी घोलें

अपने बोल में मिसरी घोलें,
सबके दिल के ताले खोलें।
हम हैं बच्चे बहुत सयाने,
मीठे बोल के बहुत दीवाने।
हर मुश्किल में इसके मोल,
दिल के सब दरवाजे खोल।
पराए को भी अपना लेते,
सबके संकट दूर कर देते।
जीवन है कुछ दिन का खेल,
यही कराते सबसे मेल।
मीठी वाणी में जादू-सी शक्ति,
सभी के लिए यह बड़ी
अभिव्यक्ति।
।

हरदम जीवन में सोच के बोल,
सबके मन में मिसरी घोल।
ध्यान सदा इस बात का रखें,
हर बातों का ख्याल भी रखें।
ध्यान रहे कभी न बिगड़े बोल,
यह मानव जीवन बड़ा अनमोल।
हम सब बच्चे दिल के भोले,
कभी न कटु सत्य भी बोलें।
वादा करें न कभी तीखे बोलें,
हरदम ही हम मिसरी घोलें।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

दोहावली

है महाकुंभ स्नान का, वेदों में गुणगान।
अमृत स्नान बेला सुखद,करे तेज प्रदान।।
त्रिवेणी जल प्रयाग का, मन से करिए स्पर्श।
सकल रोग नाशिनी यह, करिए नहीं विमर्श।।
तन-मन पावन कारिणी, सुरसरि जगत प्रसिद्ध।
प्रयागराज स्नान शुभद, सदियों से है सिद्ध।।
मनोमल परित्याग हीं, स्नान कराए ज्ञान।
स्नान सुफल होता तभी, महाकुंभ का मान।।
रूप प्रकृति का रम्य है, दिखाता तीर्थराज।
अमृत स्नान संयोग से, करता सकल समाज।।

त्रिपथगामिनी मिल गयी, यमुना जी की धार।
सरस्वती भी संग में, करती नित उद्धार।।
सृष्टि रचयिता ने किया, यज्ञ यहीं शुरुआत।
माधव द्वादश रूप में, तीर्थ बसे साक्षात।।
गेह ऋषि भारद्वाज का,भव्य त्रिवेणी धाम।
राम यहाँ आशीष ले, किए सफल हर काम।।
देखो तीर्थराज प्रयाग,अद्भुत मनहर धाम।
मिला यहाँ हनुमान को, सुखदायी आराम।।
लगता बारह वर्ष पर, कुंभ यहाँ हर बार।
महाकुंभ सौभाग्य से, मिले एक हीं बार।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

प्रार्थना

हंसवाहिनी, ज्ञानदायिनी
करें धवल शुचि मन-
अभिराम।
आए हैं हम शरण तुम्हारी,
विनय करें शुभदे निष्काम।।
हाथ जोड़ माँ द्वार खड़े हैं
जप-तप पूजन से अंजान।
करें साधना मातु शारदे!
कर न सकें तव कृपा बखान।।
दया दृष्टि ऐसी कर दें माँ!
वंदन करें सवेरे-शाम।।
हंसवाहिनी ————।
वेदों की जननी हो माते!
महिमा जग में अपरंपार।
हे विद्या-वारिधि जीवन में,
करें ज्ञान रूपी उजियार।।
कलुष भेद तम दूर करें माँ
लाकर ज्योति नवल सुखधाम।
हंसवाहिनी ————।
करुणा की रसधार बहाकर
भरें स्वरों का नित भंडार।
हर बाला हो मूर्ति ज्ञान की,
हो बालक में बुद्धि अपार।।
मातु यही है विनय हमारी,
जग में हो भारत का नाम।
हंसवाहिनी ————।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
उमध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर, बिहारदा

शिक्षा का हम लें मशाल

शिक्षा का हम लें मशाल,
कदम मिलाकर रक्खें चाल।
शिक्षा के बिन मिलता नहीं ताल,
ज्ञान ही लेता सबका हाल।
पढ़ने से कभी मुँह न मोड़ें,
हर बच्चे को इससे जोड़ें।
शिक्षा से ही होता उद्धार,
इसके बिना सभी बेकार।
शिक्षा बिना है सब अधूरा,
कोई नहीं इसके बिना पूरा।

सुखी वही जो नित पढ़ने जाए,
हर बच्चे का दिल मुस्कराए।
दिन पर दिन हम बढ़ते जाएँ,
शिक्षा का नित दीप जलाएँ।
जहाँ चाह वहाँ राह बनाएँ,
जीवन को हम धन्य बनाएँ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

मनहरण घनाक्षरी

पाठशाला के द्वार को,
बच्चों में सुविचार को,
खोलने को आप नित,
समय से आइए।
परिसर साफ करे,
सब हाथों हाथ करे,
स्वच्छ परिधान रहे,
बच्चों को सिखाइए।

कपाठ रोज याद करें,
व्यर्थ न विवाद करें,
गृहकार्य नित्य करें,
प्रेम से बताइए।
बड़ों का सम्मान करें,
दबे का उत्थान करें,
समता से साथ रहें,
भाव वो जगाइए।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

जग में ऐसा कुछ काम करो

जग में ऐसा कुछ काम करो,
जिससे पर की भी भलाई हो पाए।
सपनों में न कभी ऐसी सोच रखो,
जिससे अपनों से जुदाई हो जाए।
न केवल सपने बुनो मन में,
अमल भी साथ करते रहना।
अपने संग स्वदेश का भी,
कुछ ख्याल सदा दिल में रखना।
कभी किसी पर कुछ बोल भी दो,
उसकी भलाई के लिए ही ऐसा
करना।
मन में निरंतर सद्भाव लिए,
दिल में भी सफाई सदा रखना।
जीवन में बड़ा लक्ष्य सदा ही,
कुछ लेकर ही है चलना।
काम, क्रोध, लोभ के मग में,
कभी कुमार्ग में पग मत रखना।

जीवन जीना बारीकी से,
अल्हड़ता से सदा बच के रहना।
वाणी में सदा संयम हो
और सोच सदा उत्तम रखना।
कर्त्तव्य मार्ग के पथिक तुम,
निरंतर तुझको है चलते रहना।
अपने लक्ष्य को न छोड़ कभी,
विपरीत दिशा में पग मत रखना।
जहाँ जन्म हुआ उस मिट्टी का,
नित ध्यान सदा उसका रखना।
जीवन को सन्मार्ग धरा पर,
चलने का प्रयत्न सदा करना।
प्रेम की बात सदा करना,
जिससे दिल दूसरों से जुड़ जाए।
छल से सदा बच के रहना,
जिससे मन की भी सफाई हो पाए।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

मनहरण घनाक्षरी

सुभाष चंद्र बोस को,
देश के उस जोश को,
जनता मदहोश को,
फिर से जगाइए।
पास और पड़ोस को,
देश और विदेश को,
अंतर्मन के रोष को,
हौसला दिखाइए।

धरती आसमान को,
देश के अभिमान को,
खोये आत्मसम्मान को,
त्याग से जगाइए।
दे दो तुम खून मुझे,
कहें दूँ आजादी तुझे,
याद उन्हें करने को,
जयंती मनाइए।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

स्वतंत्रता के दीवाने सुभाषचंद्र बोस

स्वतंत्रता के दीवाने सुभाषचंद्र बोस
जिनके आदि का पता तो है,
पर अंत का पता नहीं,
किस हाल में यह घटित हुआ,
उसकी कोई खबर नहीं।
लक्ष्य उनका एक था,
आजाद भारतवर्ष हो,
देश को शीघ्र आजादी मिले,
यही देश का विमर्श हो।
कालजयी उदघोष उनका,
दिग्दिगंत घोषित हुआ।
उस काल में उस हाल में,
यह अति शोभित हुआ।
मैं तुझे आजादी दूँगा,
तुम मुझे खून दो।
आजादी प्राप्ति के लिए,
क्रांति कुछ नवीन दो।
क्रांति का यह अनुपम निनाद,
संपूर्ण जनमानस में गुंजित हुआ,
एक न चली अंग्रेज की,
उसका स्वप्न भी भंजित हुआ।
क्रांति के मसीहा वे,
देश के अग्रगण्य थे।
आजादी के अग्रदूत वे,
सचमुच ही मूर्धन्य थे।
देश की आजादी में,
नेता जी का अहम रोल था।
लक्ष्य केवल एक था ही,
और बिल्कुल सुस्पष्ट बोल था।

नेता जी की शान में,
जनता थी उलट पड़ी।
अंग्रेज को भगाने में,
चक्रव्यूह भी थी रच खड़ी।
वे ऐसे ही परम विभूति थे,
जो देश के आन-बान थे।
विदेश में हिंद सेना गठन से,
वे जन मानस के भी शान थे।
उनके सारे रगों में,
क्रांति का सुर था गूँजता।
थे आजादी के महानायक,
जन-जन भी उनको पूजता।
वे कर्त्तव्य के मिशाल थे,
भारत के दिव्य भाल थे।
अपने ही आचरणों से वे,
रत्नों के भी रत्न लाल थे।
उनकी सांगठनिक क्षमता भी,
अप्रतिम और महान थी।
उन्होंने देश के लिए जो किया,
उनके स्वाभिमान का बखान थी।
हम आज भी नमन कर रहे,
उनकी कृति के आलोक में।
पर अंत उनका पता नहीं,
यह सोचते अगाध शोक में।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

आजादी के दीवाने सुभाष

वीर सुभाष, देश की
आजादी के अभिमान हो।
वीरता के पथ पर चलकर
क्रांति के प्रमाण हो।
त्याग, तपस्या और
बलिदानी का उपमान हो।
हर दिल में बसे हुए
जनमानस का सम्मान हो।
तुम मुझे खून दो, मैं
आजादी दूँगा का नारा
बुलंद किया।
हरेक युवा के दिल में देश
पर मिटने का उमंग दिया।
तुमने साहस,युवा
प्रेरणा,चेतना का मार्ग
प्रशस्त किया।
देश को सुरक्षित रखना है
यह आश्वस्त किया।
आजादी का सपना, बनकर
भारत को स्वाभिमान दिया।
देश-विदेश जहाँ भी गए
लोगों ने उन्हें सम्मान दिया।
जाति, धर्म का बंधन तोड़,
भारत को स्वच्छंद किया।
अपने बलिदानी के दम पर
लोगों को आनंद दिया।

आशीष अम्बर 'शिक्षक'
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड-केवटी
जिला-दरभंगा
बिहार

अमर क्रांतिकारी सुभाषचंद्र बोस

चमक उठा जो नभ में बनकर एक सितारा,
गुलामी के अंधेरों में जो बना एक ध्रुवतारा।
सुभाष तुमने किया था देश हित में काम बड़ा,
युगों-युगों तक भारत देश हित में सदा अड़ा।
"दिल्ली चलो" की हुंकार बनी थी वाणी,
हर दिल में तुमने जगाई एक नई कहानी।
आँधी-तूफानों को तुमने साथी बना लिया,
दुश्मनों के सीने में भी डर बसा दिया।
रगों में जोश, आँखों में क्रांति का ज्वार,
सुभाष तुम्हारे कदमों से काँप उठा संसार।
"आजाद हिंद फौज" का तुमने दिया जयघोष,
हर भारतीय के दिल में उठा गर्व का जोश।
तुमने ललकारा था, "मुझे खून दो आजादी दूँगा"
तो देश ने हुंकार भरी था, आजादी लेकर रहूँगा।

हर गली-चौराहे पर तब जल उठी क्रांति मशाल,
तुम्हारी क्रांति गाथा बनी जन-जन का सवाल।
हिमालय भी झुका, समंदर ने रास्ता दिया,
तुम्हारे हौसले ने जैसे पूरा आसमां पीया।
तुम थे वो ओज सूरज, जो कभी डूबा नहीं,
तुम्हारी गाथा अमर है, युग-युग भूला नहीं।
भारत माँ का सपूत, सुभाष तेरा नाम,
तुझसे है रोशन देश का हर एक धाम।
तुमने आजादी की जो लिखी थी पटकथा,
चमका था भारत का जोश पूर्ण क्रांति कथा।
हे वीर सुभाष! तुझे नमन है बारंबार,
तुम हो स्वतंत्रता का सजीव उपहार।
तेरे सपनों को साकार करें हम आज,
याद है अमर गाथा, गाएँ लिए हर साज।

सुरेश कुमार गौरव,
उ. म. वि. रसलपुर फतुहा, पटना

मनहरण घनाक्षरी

नारी को सम्मान मिले,
नयी पहचान मिले,
बालिका दिवस सभी,
प्रेम से मनाइए।
कन्या का हो जन्म
पर्व,
समाज को भी हो गर्व,
लिंग भेद बंद करें,
भ्रूण को बचाइए।

अधिकार का बोध हो,
मार्ग न अवरोध हो,
शोषित अब हों नहीं,
जागृति फैलाइए।
अस्मिता हो भंग नहीं,
जीवन बेरंग नहीं,
आत्मरक्षा कर सकें,
गुर वो सिखाइए।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

मनहरण घनाक्षरी

चुनें सही सरकार,
करके सोच विचार,
स्वदेश के उत्थान को,
बटन दबाइए।
कर निज मतदान,
करें देश का उत्थान,
समाज के विकास
को,
हाथ तो बटाइए।

है आपका अधिकार,
करें सहर्ष स्वीकार,
जागरूक बन सभी,
तंत्र को बचाइए।
लोकतंत्र में चुनाव,
देशभक्ति में झुकाव,
तिरंगे से लगाव में,
पग तो बढ़ाइए।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

लोकतंत्र के सजग प्रहरी

लोकतंत्र में जनता का शासन,
जनता ही इसका बल है।
हम सब इसके सजग प्रहरी,
यही गणतंत्र का मजबूत संबल है।
हर मतदाता का अधिकार सुनिश्चित,
यही स्वस्थ लोकतंत्र की खूबी।
इसके मत से सरकार है बनती,
यही सच्चे जनतंत्र की बखूबी।
राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाने के पीछे
इसके मकसद को हम जानें।
लोकतंत्र जनता का संबल,
इसकी विशेषता को पहचानें।
हर व्यक्ति का मान बराबर,
नहीं छोटे बड़े का झगड़ा।
पढ़ा-लिखा या अनपढ़ में,
नहीं तनिक विभेद का लफड़ा।
सबकी इज्जत सबके मत का
है समान मूल्य आँका जाता।
सबकी भागीदारी सबके चिंतन में,
न कभी विभेद परोसा जाता।

मतदाता ही सरकार बनाते,
मतदाता ही सरकार बदलते हैं।
बिना किसी खून खराबा के,
चक्र राजनीति के घूमते हैं।
राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाने में,
सब मतदाता का सम्मान बढ़ जाता।
यही सजग मतदाता की कीमती पूँजी है,
यह सबका स्वाभिमान जगाता।
अपने-अपने महती दायित्वों का,
सबको ससमय बोध कराना है।
सब हैं भारत के सजग प्रहरी,
इस बड़े दायित्व से परिचय करवाना है।
यहाँ लोकतंत्र फल फूल रहा है,
इसके दशकों बीत चुके हैं।
जनता की निज इच्छा पर,
कई बार सरकार भी बदल चुके हैं।
सब मतदाता सम्यक अधिकारों का,
स्वयं बोध करें और करायें।
स्वस्थ लोकतंत्र के सजग प्रहरी होने का,
अपना सम्यक उत्तरदायित्व निभायें।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

मतदाता दिवस

चलो उठाएँ अपने कदम,
लोकतंत्र की शपथ करें हम।
मतदाता दिवस का पर्व है आया,
अधिकार को समझें,ये है
सिखाया।
हर वोट में छुपी ताकत है,
जनता की यही आवाज है।
न धन,न बल के जाल में फँसें,
सच और ईमान के संग चलें।
युवा हो या हो वृद्ध कोई,
मतदान का यह हक न खोई।
अपने मत से करें निर्णय,
देश का भविष्य बने निश्चय।
एक-एक वोट की कीमत जानें,
लोकतंत्र की ताकत पहचानें।
घर-घर में ये संदेश सुनाएँ,
हर नागरिक को जागरूक
बनाएँ।।

मतदान हमारा अधिकार है,
ये हर जन का व्यवहार है।
२५ जनवरी को करें संकल्प,
लोकतंत्र मान का यही विकल्प।
चलें साथ में देश के नायक,
हर मतदाता बनें वहाँ सहायक।
कदम बढ़ाएँ, हाथ उठाएँ,
सच्चे नागरिक का फर्ज निभाएँ।
वोट करें, देश बनाएँगे,
जागरूकता से सबको जगाएँगे।
चलो मनाएँ मतदाता दिवस,
लोकतंत्र को करें विशेष।

सुरेश कुमार गौरव,
उ. म. वि. रसलपुर फतुहा, पटना

मनहरण घनाक्षरी

कटक में जन्म लिए,
देश हित कर्म किए,
देशभक्त थे सुभाष,
कर्मनिष्ठ जानिए।
माता प्रभावती साथ,
पिता जी जानकी नाथ,
शिक्षा कर्म में प्रख्यात,
दिव्य पुत्र मानिए।

हिंद फौज का गठन,
'जय हिंद'की लगन,
राष्ट्रहित सर्वोपरि,
जन-जन ठानिए।
इच्छाओं का त्याग कर,
राष्ट्रभक्ति भाव भर,
विचारों से ज्योतिर्मय,
मार्ग पहचानिए।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
उमध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर, बिहारदा

गणतंत्र भारत की पहचान

जन-गण-मन की गूँज हो रही,
हर दिशा में शंखनाद हो रही।
संविधान की महिमा गाते हैं,
विजय पताका हम फहराते हैं।
आएँ! शूरवीरों की गाथा गाएँ,
देशप्रेम के प्रेरणा दीप जलाएँ।
सत्य,अहिंसा,धर्म का मान,
गणतंत्र है भारत की पहचान।

हर भारतवासी का एक विचार,
सब मिलकर गढ़ें नया आधार।
संघर्ष,बलिदान का फल है ये,
हम सबका गौरव पल है ये।
ध्वजा हमारी सदैव ऊँची रहेगी,
वीरों की विरासत हमेशा सजेगी।
जय भारत, जय गणतंत्र हमारा,
मातु चरण में देशप्रेम का नज़ारा।

सुरेश कुमार गौरव,
उ. म. वि. रसलपुर फतुहा, पटना

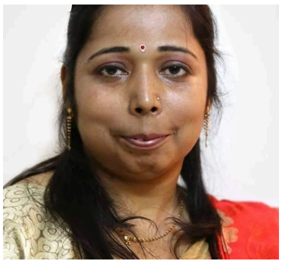

गणतंत्र महान

एक ध्वज एक राष्ट्र एक गान
नियमों का पुलिंदा है संविधान।
राष्ट्र हित में एकजुट हो रहे सब,
जय जन भारत गणतंत्र महान।
विभिन्न भाषा विभिन्न बोली है,
विभिन्न हैं रहन-सहन,खान-पान।
सबके लिए हो समान अवसर,
न्याय भी रहे सबके लिए एक
समान।
अनेकता में एकता है मूल मंत्र,
जन-जन का है यह मजबूत तंत्र।
गणों का है ये राज्य जाने सभी,
विश्व में भी सम्मानित यह
गणतंत्र।

राष्ट्रपति रहे सर्वोपरि चलाए शासन
अनेक राजनीतिक दल रखें
अनुशासन।
प्रधानमंत्री के कैबिनेट में नियम बनें,
लाल किले की प्राचीर से दें वो
भाषण।
तिरंगे की शान में गाएँ सब राष्ट्रगान,
जय जन भारत हमारा है भारत
महान।
इसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहें,
सर्वधर्म समभाव बने इसकी पहचान।

रूचिका
रा.उ.म.वि. तेनुआ,गुठनी सीवान, बिहार

गणतंत्र की शान

गणतंत्र की शान पर ही,
चल रहा यह देश है।
वैशाली की पावन धरा से,
शुभ मिल रहा संदेश है।
गणतंत्र का अवतरण यहाँ,
गणतंत्र की यह जान है।
इस महती धरा से जो जुड़ा,
उसका स्वर्णिम ललित विहान है।
गणतंत्र के मानस पटल से,
जो हो रहा सत्कार्य है।
जन-जन में जो प्रीति बोये,
यह कोटि जनों को स्वीकार्य है।
दिग्भ्रमित न कोई कर सके,
यह ऐसा पथ है न्याय का।
हम मुश्किलों से पार पाते,
दंड भी मिलता अन्याय का।
जन-जन की आकांक्षा संजोए,
चमक रहा यह पावन देश है।
जनतंत्र के बढ़ते चरण से,
यहाँ मिट रहा सब क्लेश है।
जन-जन की आकांक्षा से,
यह अनुनादित भारतवर्ष है।

विश्वास की महती धरा पर,
प्रत्येक दिलों में हर्ष है।
गीता, रामायण आदि ग्रंथों से,
जो मिल रहा उपदेश है।
हर रगों के पावन पलों में,
यह दिख रहा परिवेश है।
यह देश अपने करों से,
प्रगति के सारे इबारत लिख रहा।
अपने स्वर्णिम सुनहरे काल की,
अब पटकथा भी लिख रहा।
आज गणतंत्र के पावन दिवस पर,
हम कोटि सुमन बरसा करें।
निज गणतंत्र की अभिवृद्धि में,
सब लोग मिल हर्षा करें।
भारत की शान सकल विश्व में,
यों ही शीर्ष पर चमकता रहे।
इस गणतंत्र की पावन धरा पर,
हर जन यों ही दमकता रहे।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

My Nation and our hearts so true

January 26th
a special day
we celebrate India
in a special way
The constitution guides
us
on this day so bright
we honour our nation
with all our might
The Tricolour waves
high
with colours so bold
Saffron, white and
green
with our hearts made
of gold

we stand united
hand in hand
celebrating our Republic
across our land
Jai Hind,we say
with voices loud and
clear
Happy Republic day
to all,year after year
Let's make our Nation
proud
with all our hearts so
true
Happy Republic day
My Country,we all love
you

Ashish Kumar Pathak
Middle School Sarha
Dharhara Munger

दोहावली

निर्णायक जन-जन जहाँ, सफल वहीं
गणतंत्र।
समता जिसके मूल में, भागीदारी
मंत्र।।
छब्बीस जनवरी शुभद, दिवस हुआ
गणतंत्र।
संविधान लागू हुआ, जिससे चलता
तंत्र।।
आज चतुर्दिक दिख रहा, लूट-पाट
षड्यंत्र।
चला रहे कुछ लोग
हीं, भारत का गणतंत्र।।
आओ भूल सुधारने, निखारने
गणतंत्र।
कोई न महसूस करें, जैसे हों परतंत्र।।
मानवता को ध्यान रख,सदा चलाए
तंत्र।
मानव मानव हीं रहे, बनें नहीं बस
यंत्र।।
चला रहें हम गर्व से, विशालतम
गणतंत्र।
अनेकता में एकता, यही हमारा मंत्र।।

जहाँ हर जाति-धर्म का, आदर
करता तंत्र।
पुष्पित हो इससे सदा, अपना यह
गणतंत्र।।
है अनुपम संसार में, भारत का
गणतंत्र।
आदर्शों का विधि यहाँ, है
सामाजिक तंत्र।।
नियम कानून हैं बहुत, जैसे हो
संयंत्र।
भाव संग बंधुत्व पर, मुखरित यह
गणतंत्र।।
संविधान सर्वोच्च है,जन-जन का
यह तंत्र।
तिरंगा आसमान में, सजा रहा
गणतंत्र।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

मधुमय देश बनाना है

सुरभित सुंदर संस्कार का अद्भुत
देश हमारा है,
भगत सिंह, गाँधी सुभाष संग
हमने भी दिल हारा है।
तरुणाई के प्रखर शौर्य को
जनहित में रचने के लिए,
इस अवनी के अंधकार को हमने
तो ललकारा है।
वीर सपूतों की थाती है क्रांति
गीत की पाती है,
हमने उनकी क्रांति रश्मि को उषा
किरण वन वारा है।
उठो चलो कि इस धरती का
निश्छल नीरव प्राण बनें,
सर्वस्व न्योछावर कर हम सबको
क्रांतिदूत बन जाना है।

क्यों ममता के आँचल में
विषधर अबतक विषपान करे,
विषधर के समूल शमन को
हम सबने अब ठाना है।
नहीं हुई है देर अभी भी, क्रांति
अभी अधूरी है,
मातृभूमि के कष्ट हरण को
क्रांति सही ठिकाना है।
नहीं मिलेगा चैन तनिक भी
शांति नहीं मिले पल भी,
जब तक जन-जन के आँगन
में देश प्रेम लहराना है।
जन-जन आनंद, निश्छल
निर्मल निर्विकार मन रचने के
लिए,
कण-कण, तृण-तृण मोहक
मधुमय अपना देश बनाना है।

स्नेहलता द्विवेदी"आर्या"
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज,
कटिहार

आजादी के दीवाने

आजादी के दीवाने वे, गोली
खाई, जेल गए,
फाँसी के फंदे को चूमा, हर
संकट को झेल गए।
भारती के लाल जिन्होंने, अपना
जीवनदान दिया,
जीवन की स्वर्णिम आयु
को,भारत-भू के नाम किया,
वीरों की ये अमर कथाएँ,
आजादी की थाती हैं,
रामायण व गीता की भाँति,
कर्तव्य-पथ दिखलाती है।
स्वतंत्रता के सैनिक थे वे, हर
खतरों से खेल गए।
फाँसी के फंदे को चूमा, हर
संकट को झेल गए।

जन्म लिया है पावन भू-पर,
खेल-कूद कर बड़े हुए,
ममता की आँचल में पलकर,
घुटनों चलकर खड़े हुए,
इस मिट्टी से बनी जो काया,
भू-तल में मिल जाएगी,
मातृभूमि की लाज बचाने,
कैसे काम न आएगी।
सुगंधित मलय समीर बनकर,
पंच-तत्व से मेल गए।
फाँसी के फंदे को चूमा, हर
संकट को झेल गए।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी, नालंदा

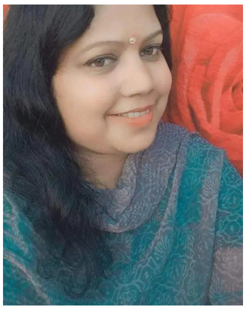

दोहावली

अमर रहे गणतंत्र यों,
जैसे सूरज चान।
जन-जन का सम्मान
ये, सबका है
अभिमान।।
संविधान से है मिला,
जीने का आधार।
बाबा साहब ने
दिया,अनुपम-सा
उपहार।।
हिंदू मुस्लिम सिख
सभी, भाई हैं सुन
मीत।
मिलजुल कर हमसब
रहें, लेंगे जग को
जीत।।

एक एक मिल दो
नहीं,ग्यारह होते मीत।
नफरत छोड़ो यार
अब,आओ कर लें
प्रीत।।
मेरे जीवन का सखे,
उत्तम है यह मंत्र।
देश सदा खुशहाल
हो,अमर रहे गणतंत्र।।
'मनु' पावन गणतंत्र पर,
करती यह ऐलान।
राष्ट्रभक्ति की राह में,
दूँगी अपनी जान।।

मनु कुमारी
मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी
पूर्णियाँ,बिहार

दोहावली

गौरव का यह है दिवस,
भारत का गणतंत्र।
समरसता का भाव ही,
दिव्य मूल है मंत्र।।
भारत प्यारा देश है,
लिखित विधान विशाल।
चलें नियम कानून से,
होगा ऊँचा भाल।।
आएँ हम गणतंत्र का, सार
बताएँ आज।
शांति और सद्भाव से,
बनते सभ्य समाज।।
गण में हो यदि तंत्र का,
कुशल क्षेम व्यवहार।
देश तभी आगे बढ़े, बने
अमन-आधार।।

फूल खिलाएँ प्रेम का,
रखें न मन में शूल।
द्वेष कपट को हम सभी,
मन से जाएँ भूल।।
सुखद ललित गणतंत्र में,
छल का रहे अभाव।
प्रेम लगन की भावना,
करें नहीं अलगाव।।
गण का हो गर तंत्र में,
सुनियोजित अधिकार।
मानें तभी विकास की,
बहे सुखद रसधार।।
दिवस जान गणतंत्र का,
करिए मन लालित्य।
मातृभूमि पर ज्योति शुभ,
फैलाता आदित्य।।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
उमध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर,
बिहारदा

प्रभु तेरा ठिकाना कहाँ

प्रभु मैं परेशान,थके हाल हूँ
क्योंकि तेरी दिल से आराधना
करता हूँ
पर तुझे कहाँ ढूढूँ ये तो बता
अपनी जिज्ञासा बुझाने मैं तो
परेशान हूँ।
तेरे बड़े बड़े भक्तों के पास गया
संतों धर्माचार्यों के पास गया
किसी ने बताया कि तू,
पर्वत पर रहता है
किसी ने कहा
कन्दराओं में रहता है
किसी ने बताया सागर में
डुबकी लगाने से दरस होगा
किसी ने कहा नदियों में डुबकी
लगाने से।
सिद्ध मौलानाओं से मिला
अल्लाह तेरा पता तो
किसी ने एक जगह नहीं बताया
किसी ने मक्का बताया किसी ने
मदीना
किसी ने मस्जिद बताया किसी ने
मजार।

यीशु बड़े बड़े पादरियों के पास भी
गया
अपने को आधुनिक ज्ञानी कहने वाले
ये तो और बिखरे-बिखरे मिले
सब ने तेरा पता अलग-अलग बताया
किसी ने कैथोलिक चर्च बताया
किसी ने प्रोटेस्टेंट चर्च।
प्रभु गहरी चेतन अवस्था में जाकर
दिल से तुझे आवाज़ दिया
तो उत्तर आया
कहाँ कहाँ तू ढूँढें बंदे
मैं तो तेरे पास में
मैं तुझे माँ की आँचल में पाया
पिता की गोद में पाया
परिजनों के प्यार में पाया
दु:खी जनों की सेवा में पाया।
प्रभु अब तो बता दे
तू रहता कहाँ है।

संजय कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकारी
अररिया

इन्द्रधनुष

छम छम करती वर्षा रानी,
मूसलाधार गिराए पानी।
बैठ गयी अब वो थककर,
सूरज दादा आएँ निकलकर।
संग में झोला भरकर लाएँ,
रंग बिरंगे फल दिखलाएँ,
सबके सब है सेहतमंद,
खाते इनको अक्लमंद।
बैंगनी रंग का जामुन है,
मधुमेह रोकने का गुण है।
नीला अंगूर जो भी खाए,
प्रतिरक्षा मजबूत बनाए।
आसमानी काँटेदार करेला,
त्वचा न होने देता मैला।
हरे रंग का आँवला चूर ,
विटामिन सी इसमें भरपूर।

पीले-पीले थें कई पपीते
इसको खाकर लम्बी जीते।
नारंगी रंग की संतरा लाएँ,
बीमारी पेट की दूर भगाएँ।
लाल सेव सुबह जो खाता,
वैद्य के पास कभी न जाता।
सतरंगी फल दादा के पास,
बनाया इंद्रधनुष आकाश।
बैनीआहपीनाला रंग,
स्वस्थ शरीर फल के संग।
अब बच्चें पुकारने लगे,
इंद्रधनुष निहारने लगे।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

Time

Time is money
Keep it is palm
Taste as honey
Have peace and calm
Who fail to go with it
Lose it's vow
Progress intercepted
And darkness follow

You can sit
But it never does
Who know it
are Really clever
You can wait
But it doesn't
Running is its nature
Without any halt.

Ram Kishor Pathak
Primary School Bhedhariya
English Paliganj Patna

मनहरण घनाक्षरी

वीणा रखती हाथ में,
सुर संगीत साथ में,
जीवन में आनंद हो,
भाव रस पीजिए।
माँ तेरी हंस सवारी,
लगती कितनी न्यारी,
धवल हो मन मेरा,
शंका हर लीजिए।

कर में पुस्तक तेरी,
हर लो अज्ञान मेरी,
ज्ञान का भण्डार भर,
कृपा अब कीजिए।
तुझसे विनती करूँ,
चरणों में शीश धरूँ,
तू ममता की खान माँ,
शरण दे दीजिए।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

बापू सदा अमर रहेंगे

सत्य अहिंसा का था नारा,
जिसने भारत को सँवारा।
बापू के दृढ़ संकल्पों से,
फूटा स्वाधीनता की धारा।
चलते थे नंगे पाँव मगर,
इच्छा शक्ति अटल थी प्रखर।
डांडी मार्च का जोश जगा,
टूटा फिरंगियों का कहर।
खादी में लिपटा था तन,
लेकिन मन था देशभक्त।
शोषित-पीड़ित को दी राहें,
बन दीपक सर्वत्र परमभक्त।

बोली उनकी थी कोमल,
पर थी सच्चाई से अड़ी।
हर दिल में रोपित कर गए,
शांति, प्रेम सर्वत्र थी खड़ी।
तीस जनवरी का वह क्षण,
रोया भारत संग पूरा चमन।
बापू अमर हैं, सदा अमर रहेंगे,
हर युग में होंगे पूज्य! मिला
अमन।

सुरेश कुमार गौरव,
उ. म. वि. रसलपुर फतुहा, पटना

मनहरण घनाक्षरी

अंडाकार पथ पर,
ग्रह लगाते चक्कर,
सूर्य रहता केन्द्र में,
परिक्रमा मानिए।
सूर्य की पृथ्वी चंद्रमा,
करे सदा परिक्रमा,
तीनों सरल रेखा में,
ग्रहण बखानिए।

बीच में जो पृथ्वी आए,
चंद्रग्रहण हो जाए,
पूर्णिमा की रात में हीं,
होता पहचानिए।
चंद्रमा बीच में आए,
सूर्यग्रहण हो जाए,
अमावस्या को दिन में,
विधान है जानिए।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ?
आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ?
नीचे दिए गए वेबसाइट,ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े।

writers.teachersofbihar@gmail.com

padhyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010